आजीविका से बदली जिंदगी

गिरिडीह जिले के झलकडीहा कलस्टर की मंझली देवी खुद और अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकाल चुकी है. वर्तमान में जो हालात है, वो पहले नहीं थे. मंझली देवी की जिंदगी काफी मुश्किल से कट रही थी. आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी. पति के पास रोजगार का कोई साधन नहीं था. हर ओर से आय का स्त्रोत नहीं रहने के कारण बच्चों को पढ़ाने और घर-गृहस्थी चलाने में मंझली देवी को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था. रोजगार के नाम पर मंझली देवी और उनके पति सिर्फ खेती-बारी करते थे. उतने से घर चलाना काफी मुश्किल था. इस दौरान मंझली देवी को स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली. समूह के कार्यों के संबंध में पूरी जानकारी इकट्ठा करने के बाद मंझली नयी डगर आजीविका सखी मंडल से जुड़ गयी. समूह से जुड़ने के बाद मंझली समूह की गतिविधियों में लगातार शामिल होने लगी.

अनुशिला हेंब्रम
प्रखंड : बेंगाबाद
जिला : गिरिडीह

समूह की बैठकों में शामिल होने के कारण मंझली देवी ने समूह की कार्यप्रणाली को समझ लिया. बचत करने और आजीविका बढ़ाने की जानकारी मिलने के बाद मंझली देवी ने समूह से लोन लेकर सूकर पालन की शुरुआत की. मंझली देवी की मेहनत रंग लायी और आज उसके पास काफी संख्या में सूकर हैं. सही मायने में सूकर पालन के बाद से मंझली की आर्थिक स्थिति में धीरे-धीरे सुधार होने लगा. अब मंझली देवी के बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं. मंझली देवी ने समूह से लिये लोन को वापस कर दिया है और इलाके में बेहतरीन सूकर पालक के तौर पर अपनी अलग पहचान बना ली. अपनी मेहनत और लगन से मंझली देवी समूह के अन्य दीदियों के लिए अब प्रेरणास्त्रोत बन चुकी है.

अपने सूकर के साथ सखी मंडल की सदस्य मंझली देवी.

अनगड़ा सिंगारी कलस्टर की दीदियों ने मनाया आजादी का पर्व

रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड के सिंगारी कलस्टर की सखी मंडल की दीदियों ने धूमधाम से आजादी का पर्व स्वतंत्रता दिवस मनाया और राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी. सिंगारी कलस्टर की अध्यक्ष और बीएलएफ की कोषाध्यक्ष तिरामनी दीदी ने झंडोत्तोलन किया. इस मौके पर समूह की अन्य दीदियां भी मौजूद रहीं. इस दौरान सखी मंडल की दीदियों ने देश के वीरों को याद किया. दीदियों ने कहा कि हमारे वीर स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को आजाद कराने में अपने प्राणों की आहूति तक दी, इसे कभी भूला नहीं जा सकता. कई दीदियों ने कहा कि इस तरह का कार्यक्रम आयोजित होने से हमें कई संदेश मिले हैं.

पिंकी महतो
प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

झंडोत्तोलन करती सखी मंडल की सदस्य.

व्यवसाय बढ़ाने में मददगार है स्वयं सहायता समूह

गोड्डा जिले के ठाकुरगंगटी प्रखंड के मोरडीहा गांव के अधिकतर ग्रामीण आज भी कृषि पर निर्भर हैं. गांव में कृषि योग्य जमीन है. सिंचाई के लिए तालाब भी है. गांव की महिलाएं भी कृषि कार्य में पूरा सहयोग करती हैं. ग्रामीणों के पास रोजगार का और कोई दूसरा विकल्प नहीं है. बुचो देवी भी मोरडीहा गांव की रहनेवाली हैं. बुचो के पति गांव में ही एक चाय की दुकान लगाते हैं और उनके पास कुछ जमीन भी है, जिसमें वो खेती करती हैं. खेती-बारी ही बुचो देवी के जीवन-यापन का मुख्य जरिया है. मोरडीहा गांव में साल 2016 में जेएसएलपीएस के सहयोग से महिला समूह का गठन हुआ. समूह की जानकारी मिलने के बाद बुचो देवी भी महिला समूह से जुड़ गयी. इसके बाद बुचो देवी को आधुनिक तरीके से खेती करने की जानकारी मिली. जानकारी प्राप्त कर बुचो देवी ने इसका उपयोग अपने खेतों से ही शुरू किया. आधुनिक तरीके से खेती करने के कारण पहले की अपेक्षा फसल के उत्पादन में बढ़ोतरी हुई. इससे उनके जीवन में भी बदलाव दिखना शुरू हुआ. वर्तमान में गांव में 34 महिला समूह है, जिसमें 450 महिलाएं जुड़ी हैं और सभी कार्य नियम के अनुसार होते हैं. समूह की सदस्य हर गतिविधियों में काफी गंभीर हैं. इसी का नतीजा है कि महिलाएं बचत करने लगी. अब तक समूह में सवा लाख रुपये की लेन-देन हो चुकी हैं. बुचो देवी ने समूह से 20 हजार रुपये का लोन लिया. इस पैसे का उपयोग उन्होंने अपनी बेटी की शादी में की हैं. बुचो की इच्छा है कि समूह से लिये गये लोन को चुकता पर बड़ा लोन लेकर व्यवसाय शुरू करें. बुचो कहती हैं कि समूह से जुड़ कर काफी खुश हूं. अन्य महिलाएं भी समूह से जुड़ कर काफी खुश हैं. समूह की दीदियां भी समूह से लोन लेकर अपना व्यवसाय करने की सोच रही हैं.

कुमारी पुनमवाला
प्रखंड : ठाकुर गंगटी
जिला : गोड्डा

स्वावलंबी बनाने में जुटी सुभानी

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड का एक गांव है तिरला. इस गांव की सुभानी तिग्गा की अपने गांव में एक अलग पहचान है. सुभानी महिला समूह से जुड़ कर अन्य दीदियों को गरीबी से बाहर निकालने के लिए उन्हें प्रोत्साहित कर रही है. तिरला गांव में तीन साल पहले आजीविका मिशन के तहत महिला समूह का गठन हुआ. गांव की महिलाओं को आंध्र प्रदेश से आयी दीदियों ने प्रशिक्षण दिया. सुभानी तिग्गा भी समूह से जुड़ी और प्रशिक्षण में शामिल हुई तथा समूह से जुड़ी गतिविधियों को जाना. सुभानी जहां पहले सिर्फ अपना घर संभालती थी, वहीं अब समूह से जुड़ कर घर-बाहर दोनों काम बखूबी संभाल रही है. इस दौरान सुभानी ने समूह से 10 हजार रुपये का लोन लिया. इन पैसों से वह गांव में राशन की दुकान खोली. धीरे-धीरे दुकान चल पड़ी और अच्छी आमदनी भी होने लगी. इस बीच सुभानी ने समूह से लिये 10 हजार रुपये के ऋण को भी चुका दिया.

आशा तिग्गा
प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : प सिंहभूम

छोटा लोन चुकाने के बाद सुभानी ने समूह से एक लाख रुपये का बड़ा लोन लिया. इस पैसे से वह एक मालवाहक टेम्पो खरीदी. दुकान और टेम्पो से आमदनी अच्छी होने लगी. इस काम में उसके पति का भी साथ मिला. आमदनी अच्छी होने के कारण सुभानी की दोनों बेटियां आज अंग्रेजी स्कूल में पढ़ रही है. सुभानी की इच्छा है कि वो गांव में एक बड़ी दुकान खोले, ताकि गांववालों को सामान खरीदने के लिए बाहर नहीं जाना पड़े. समूह ने पांच सदस्यों के साथ रहनेवाली सुभानी को गरीबी से बाहर निकाला. अब सुभानी भी अपनी ही भांति अन्य दीदियों को भी गरीबी से बाहर निकालने में जुटी है.

अपनी दुकान और ऑटो के साथ खड़ी सुभानी तिग्गा.

नीता का परिवार अब हुआ खुशहाल

रांची जिले के कांके प्रखंड अंतर्गत एक गांव है चेड़ी. इस गांव में साल 2016 में जेएसएलपीएस के सहयोग से 13 महिला समूह बनाये गये हैं. समूह से जुड़ कर गांव की नीता देवी आज खुद को गरीबी से बाहर निकाल चुकी है. सखी मंडल से जुड़ कर आज वो अपनी आजीविका अच्छे से चला रही है. हालांकि, आज जैसे हालात पहले नहीं थे. नीतू देवी और उसके पति बेरोजगार थे. खेतीबारी भी अधिक नहीं थी. नीतू मजदूरी करने के लिए दूसरे जगहों पर जाती थी. कई बार तो ऐसा भी होता था कि रोजगार नहीं मिलने के कारण खाली हाथ वापस लौटना पड़ता था. कोई रोजगार नहीं होने के कारण चार सदस्यों का परिवार चलाने में काफी परेशानी हो रही थी. इसी बीच नीता देवी को महिला समूह की जानकारी मिली.

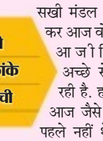

सुमन देवी
प्रखंड : कांके
जिला : रांची

जानकारी प्राप्त कर नीता भी समूह से जुड़ गयी. समूह से जुड़ने के बाद नीता समूह की गतिविधियों में समय देना शुरू की और हर गतिविधियों को बारिकी से जाना. नीता ने समूह से पहली बार 500 रुपये का लोन लिया. फिर लोन चुका कर समूह से 30 हजार रुपये का ऋण लिया. इस राशि से नीता ने धान कूटने की मशीन खरीदी. इससे उन्हें काफी लाभ हुआ और परिवार की आर्थिक स्थिति में आमूल-चूल परिवर्तन आया. घर बैठे रोजगार भी मिलने लगा. व्यवसाय में लाभ हुआ और नीता देवी ने समय से अपना लोन भी चुका दिया. इसके बाद नीता ने समूह से 60 हजार रुपये का एक और लोन लेकर एक मालवाहक ऑटो खरीदी. अब नीता और उसके पति को काम के लिए दूसरे जगह जाने की जरूरत नहीं है. नीता के पति भी काफी मेहनत करते हैं और आज उनकी भी आमदनी अच्छी हो जाती है. नीता के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी होने से नीता अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ाने लगी. इस बीच समूह से लिये लोन को भी चुकता कर दिया. नीता देवी कहती है कि समूह से जुड़ कर उन्हें काफी लाभ हुआ है. समूह की ही देन है कि आज वो गरीबी से बाहर निकल चुकी हैं. नीता देवी ने गांव की महिलाओं को भी गरीबी से बाहर निकलने का रास्ता बता दिया है. कभी मुफलिसी में जीवन व्यतीत करनेवाली नीता देवी का परिवार आज काफी खुशहाल है.

समूह के माध्यम से खरीदी ऑटो के साथ नीता देवी.

समूह से रोजगार की ओर बढ़ते दीदियों के कदम

पश्चिमी सिंहभूम जिले के तांतनगर पंचायत अंतर्गत अंगरडीहा गांव में महिला समूह लगातार गांव के विकास में अपना अहम योगदान दे रही है. समूह की महिलाएं गांव में इसीआइ की बैठकों में शिरकत करती है. उन बैठकों में चर्चा होने के बाद ही गांव या समूह का कोई कार्य करती है. साथ ही दस सूत्रों का भी पालन करती है. इसके अलावा पंचायतों में सखी मंडलों के कार्य की पूरी निगरानी भी रखी जाती है. पशु सखी व कृषक मित्र किस तरीके से कार्य कर रहे हैं, संगठन के बैठक में सभी महिलाएं अपनी भागीदारी सही तरीके से निभा रही है या नहीं, इसकी भी परस्पर जांच की जाती है. निगरानी समिति यह भी जांच करती है कि समूह की दीदियां पांच सूत्री नियम का पालन करती हैं या नहीं या फिर समूह सही समय पर जाकर बैंक लिंकेज कराते है या नहीं. ऐसे तमाम तरह के कार्यों पर निगरानी रखी जाती है, ताकि संगठन सही तरीके से चल सके. इसका फायदा भी हो रहा है. सभी काम सही तरीके से हो रहे हैं. महिला समूहों को इसका लाभ भी मिल रहा है. ग्राम समिति की अध्यक्ष और निगरानी समिति द्वारा सामाजिक कार्य और सरकारी कार्यों का लाभ सभी तक पहुंच रहा है या नहीं यह सुनिश्चित कर समूह की दीदियां आगे बढ़ रही हैं. ग्राम संगठन और जेएसएलपीएस के माध्यम से आज महिलाएं सशक्त और आत्मनिर्भर बन रही है. घर के कामकाज से लेकर बैंक के कामकाज तक अब दीदियां खुद कर रही हैं.

सुशीला देवी
प्रखंड : तांतनगर
जिला : प सिंहभूम

सखी मंडल की बैठक में शिरकत करतीं समूह की दीदियां.

आगे बढ़ने के सपने देखती सुआ की रहने वाली शांति कुंवर

पलामू जिले के मेदिनीनगर प्रखंड के सुआ गांव की रहनेवाली शांति कुंवर जिंदगी के गहरे जख्म को मात देकर आज अपनी जिंदगी में मजबूती से आगे बढ़ रही है. शांति आज अपनी बेटी के साथ अच्छे से जीवन यापन कर रही है. दरअसल, शांति की शादी साल 2005 में संतोष विश्वकर्मा के साथ हुई थी. उस समय उनकी उम्र महज 18 साल थी. इस दौरान उनकी एक बेटी हुई. परिवार में काफी खुशहाली थी. सब कुछ सही तरीके से चल रहा था, लेकिन अचानक साल 2014 में शांति के पति बीमार पड़े और उनका देहांत हो गया. इसके बाद शांति का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया और घर में हालात यह हो गये कि मां-बेटी दाने-दाने को मोहताज हो गये. सुबह खाते थे, तो शाम में खाने के लिए सोचना पड़ता था. विपरीत परिस्थितियों में गरीबी से जूझने के बावजूद शांतित ने हार नहीं मानी और साल 2014 में लक्ष्मी आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी और समूह में बुक कीपर के तौर पर काम करना शुरू किया. इसके लिए शांति ने 10 दिनों का प्रशिक्षण भी लिया. प्रशिक्षण लेने के बाद शांति मास्टर बुक कीपर के तौर पर काम करने लगी. साथ ही ग्राम आजीविका संगठन में सहायिका का भी काम मिल गया. इसी बीच शांति ने बीआरपी का भी प्रशिक्षण लिया. प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद शांति कुंवर नयी महिला समूह की दीदियों को बुक कीपर का प्रशिक्षण देने लगी और समूह-समूह में जाकर एमआइएस बनाने लगी. इससे शांति की आमदनी भी शुरू हो गयी. पैसे मिलने से अब शांति अपनी छह साल की बेटी को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही है और अपनी जरूरतों को पूरा भी कर रही हैं. शांति अब बुरे दिनों से बाहर निकल कर आगे बढ़ने के सपने देख रही है. साथ ही गांव में उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बना ली हैं.

ममता देवी
प्रखंड : मेदिनीनगर
जिला : पलामू

शांति कुंवर

स्मार्ट बन रहीं सखी मंडल की दीदियां

रांची जिले के कांके प्रखंड की दीदियां अब स्मार्ट फोन का उपयोग कर स्मार्ट बन रही हैं. 24 गांवों के 35 महिला समूहों के बीच स्मार्ट फोन का वितरण हुआ. स्मार्ट फोन का वितरण उन समूह की दीदियों को दिया जा रहा है, जिनके समूह के रजिस्टर में समूह की सभी गतिविधियों का जिक्र हो. साथ ही समूह के लिए बनाये गये 10 सूत्रों के नियमों का पालन होता हो. फोन का वितरण सामुदायिक भवन में किया गया. इस दौरान 24 गांवों के 35 समूहों के अध्यक्ष, सचिव, कृषक मित्र और समूह की दीदियां शामिल हुई. चंदवे कलस्टर के सीसी मो. सरफरोज खान, सीसी रॉकी साहु और पीआरपी आशा दीदी ने समूह की दीदियों के बीच स्मार्ट फोन का वितरण किया.

प्रीति लिंडा
प्रखंड : कांके
जिला : रांची

स्मार्ट फोन पाकर दीदियां काफी खुश हुईं. स्मार्ट फोन के वितरण के बाद मो सरफरोज खान ने दीदियों को स्मार्टफोन के उपयोग के तरीके और फायदे के बार में बताया. दीदियों को बताया गया कि किस तरह समूह की दीदियां वीओ की मीटिंग के लिए, सीआइएफ मीटिंग के लिए और समूह में होने वाली हर गतिविधियों के लिए स्मार्ट फोन का इस्तेमाल कर सकती है. साथ ही अब स्मार्ट फोन के माध्यम से समूह के कार्यों का लेखा-जोखा करने संबंधी जानकारी भी दी गयी. इसके अलावा दुबलिया गांव के 12 में से छह महिला समूहों के बीच भी स्मार्ट फोन का वितरण किया गया. स्मार्ट फोन मिलने के बाद कोमल महिला समूह की अध्यक्ष पार्वती देवी काफी खुश हुईं और कहा कि अब समूह में लेखा-जोखा का कार्य करने में आसानी होगी. किसी भी मीटिंग की जानकारी स्मार्ट फोन के माध्यम से मिल जायेगी. दुबलिया ग्राम संगठन की अध्यक्ष सह सीमा स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष सीमा कुजूर ने कहा कि पहले ग्राम संगठन की बैठकों की जानकारी और ग्राम संगठन से होने वाले सामाजिक कार्यों का ब्योरा ब्लॉक ऑफिस तक पहुंचाने में परेशानी होती थी, लेकिन अब स्मार्ट फोन के जरिये मिनटों में यह काम हो जायेगा. स्मार्ट फोन पाकर समूह की दीदियां काफी खुश दिखी और इस कार्य के लिए प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और जेएसएलपीएस के अधिकारियों को धन्यवाद दिया.

स्मार्ट फोन प्राप्त करती सखी मंडल की सदस्य.